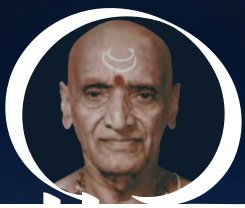

शिव गरिमा

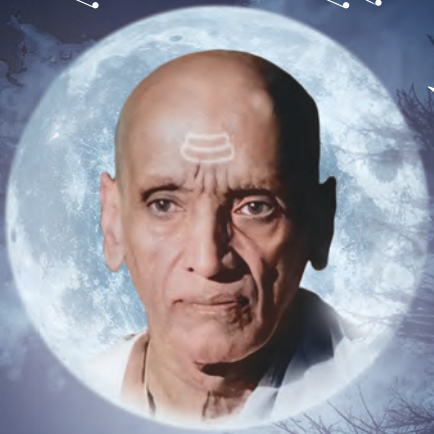

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका

वर्ष–3, अंक–2, माह–फरवरी 2025

आशीर्वाद : प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, ईंटालीखेड़ा

प्रिय साधकों,

आप सभी ने अपने मन से शक्तिपात दीक्षा ली है, इस दीक्षा के द्वारा आत्मकल्याण का मार्ग चुना है। हमारे इस मार्ग के चार प्रमुख स्तंभ हैं–ध्यान, जप, सत्संग व सेवा। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है ध्यान। मुझे न जाने क्यों लगता है कि ज्यादातर साधक ध्यान करते ही नहीं और जो करते भी हैं, वे भी ज्यादातर नियमित नहीं हैं। ऐसा क्यों? इस परंपरा में हमने, हमारे सद्गुरु ने, उनके सद्गुरुओं ने जो भी पाया है, वह ध्यान से ही पाया है। यह अटल सत्य है। मैं बार बार आप सब से यही आग्रह करती हूँ कि ध्यान करो, ध्यान करो। किंतु आप हैं कि ध्यान पर ध्यान ही नहीं देते।

मुझे यह समझना है कि इसका कारण क्या है? क्या ध्यान विधि बहुत जटिल है? क्या मैं आपको जो समझा रही हूँ वो ठीक से नहीं समझा पा रही हूँ? क्या मुझमें कोई कमी है? क्या आपने ध्यान को महत्वपूर्ण बातों में रखा ही नहीं है? क्या ध्यान के बजाय और बातें आपके लिए ज्यादा जरूरी हैं? क्या आप ध्यान का वादा करके भूल जाने की बीमारी से ग्रस्त हैं? क्या ध्यान आपकी दृष्टि में आत्मकल्याणकारी नहीं है? ऐसा ही शायद आपने तय कर लिया है? बात चुभती हुई है, पर इसका निराकरण किए बिना साधन-पथ पर बढ़ना संभव ही नहीं है। मैंने तो आपको अनेक बार कहा है कि सुबह शाम एक-एक घंटा ध्यान करें। इसमें भी यदि बाधा हो तो दिन में कभी भी एक घंटा ही कर लें। इसमें भी मुश्किल हो तो आधा घंटा ही कर लें और यदि यह भी आपको भारी लग रहा हो तो कुछ समय ही आसन पर बैठकर ध्यान कर लें। बस, किसी भी दिन

आसन कोरा ना रहे। अब इससे अधिक क्या सरलता हो सकती है? यह भी संभव नहीं है क्या? यदि इतना भी संभव नहीं है तो फिर आप खुद सोचें कि दीक्षा ली ही क्यों?

एक बात पक्की है, जो गांठ बांध लो कि सांसारिक सुख जितने भी चाहोगे, आप अपने प्रयासों से प्राप्त कर लोगे पर यदि जीवन में आनंद और स्वकल्याण का भाव चाहते हो वह तो साधन से ही आएगा। ध्यान से ही जीवन में आनंद के फूल खिलेंगे। ध्यान ही हमारी आराधना का मुख्य आधार है। फिर ऐसे सहज व प्रमुख साधन से आप क्यों दूर होते जा रहे हैं? मेरा मन तो यही चाहता है कि आप सब नियमित ध्यान करें, आत्मकल्याण करें और जीवन को धन्य करें। आपकी सफलता देखकर मुझे जो आनंद मिलेगा वह अनूठा होगा। आपका शुभ हो, कल्याण हो इसी भाव से आप में संभावना देखकर आपको सुगंध-पथ का पथिक बनाया है। देर हुई है पर अंधेर न होने दें। सबको आशीर्वाद है-जागें, सवेरा हो गया है।

आपकी अपनी प्रभु बा

-●✲●-

संपादकीय

सहज अभिव्यक्ति

हमारा कुंभ-स्नान

शिव-गरिमा का प्रकाशन तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गया है। पूर्व में आश्रम द्वारा शिव-प्रवाह के शीर्षक से एक मुद्रित पत्रिका प्रकाशित होती थी। शिव-प्रवाह का उद्देश्य गुरुदेव परमपूज्य राजयोगी प्रभु बा के कार्यक्रमों संबंधी समाचार देना रहता था। वह एक विवरणात्मक पत्रिका थी।

समय बदला, तौर-तरीके बदले, वैज्ञानिक उन्नति हुई और संचार माध्यमों में क्रांति घटित हो गयी। इंस्टाग्राम, फेसबुक, व्हाट्सऐप जैसे कई ऐप्स इसके अच्छे उदाहरण हैं। यह सोचकर ही एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, काशी शिवपुरी आश्रम द्वारा डिजिटल पत्रिका शिव-गरिमा का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। यह पत्रिका डिजिटल है तथा बिना शुल्क के डाउनलोड अपलोड होती है अतः खर्च की भी जरूरत नहीं है। शिव-गरिमा के प्रकाशन के साथ ही इसके उद्देश्यों में भी आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। हर माह इसमें सद्गुरु-संदेश होता है जिसमें हमारे परमपूज्य प्रभु बा आवश्यकतानुसार सभी साधकों के लिए अपना मनोगत लिखते हैं। यह वासुदेव कुटुम्ब के सभी साधकों के लिए मार्गदर्शन भी है और पालनीय भी। हर माह सद्गुरु का स्वयं का ध्यान का या अन्य स्थिति का अनुभव प्रकाशित होता है। साधन के द्वारा सद्गुरु को जो अनुभव आते हैं उनका दिशादर्शन भी यह स्तंभ पूरा करता है। इनके अलावा साधन-संपदा में साधक, साधन, सद्गुरु आदि विषयक आलेख होते हैं। संपादकीय में समसामयिक अथवा शाश्वत सत्य व स्थिति का समावेश किया जाता है। गुरु महिमा इसका एक

स्थायी स्तंभ है जिसमें गुरुभक्ति, गुरुनिष्ठा आदि बढ़ाने वाले प्रसंगों का समावेश किया जाता है। यह अन्य परम्पराओं का भी हो सकता है। स्थायी स्तंभों में 'बात कहाँ तक पहुँची' यानी साधकों द्वारा शिव-गरिमा पढ़ने के बाद उनकी प्रतिक्रिया क्या है? यह दिया जाता है। 'रचनात्मकता का आनंद' भी एक स्थायी स्तंभ है इसमें सृजनशील, कल्पनाशील व रचनात्मकता वाले साधक-साधिकाओं द्वारा मीम्स (चित्र) बनाए जाकर उनको संकलित करके जोड़ा जाता है। ऐसा ही एक और स्थायी स्तंभ है 'शब्दों की माला' इसमें साधक किसी भी उपयोगी विषय पर अपनी काव्यकृति प्रदर्शित करता है।

इसके अलावा हर माह किसी न किसी विषय की जानकारी प्रस्तुत की जाती है। ये विषय किसी साधक द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर भी हो सकता है या आवश्यकता समझने पर इसी विषय पर खुलासा भी हो सकता है। इनके अलावा भी समय-समय पर जरूरत के अनुसार और मेटर जोड़ा जाता है। कुल मिलाकर सार रूप में कहा जा सकता है कि शिव-गरिमा ई-पत्रिका साधक, सद्गुरु, साधक की दुनियाँ व सद्गुरु की दुनिया है। यह अपनी परंपरा की कतिपय जानकारियों का एक संग्रह होता है। शिव-गरिमा में कोई भी साधक इस प्रकाशन-गंगा में डुबकी लगाकर वासुदेव कुटुम्ब की धारा में कुंभ स्नान कर सकता है।

- स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

-●✻●-

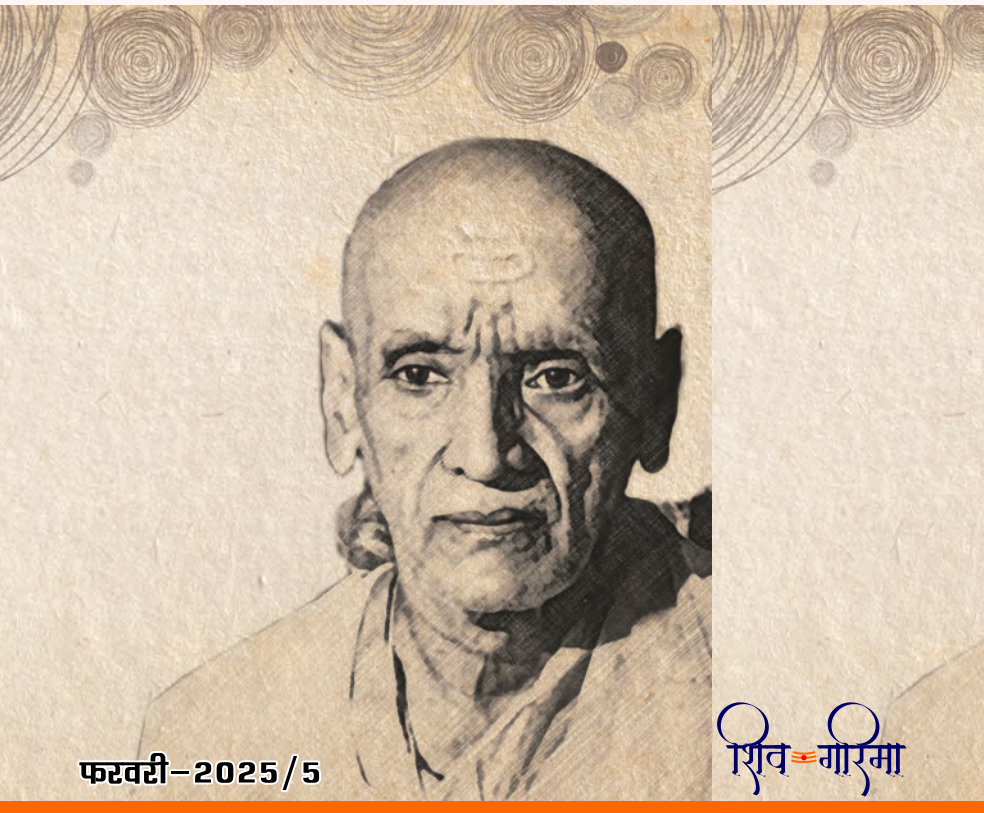

मैं साधक की साधक मेरे

प्रभु बा का अनुभव

बदलापुर के त्रैलोक्य आश्रम में उस समय ज्यादा रहना होता था। एक दिन में जैसे ही सुबह सोकर उठी तो वापस न जाने क्यों बिस्तर पर ही पीछे की ओर गिर गई। उठना चाहती थी पर उठना नहीं हो सका था। शरीर में भी कुछ ठीक नहीं लग रहा था। परिकर साधक जो भी पास थे, उन्होंने संभाला। मेरा शरीर कुछ-कुछ नीला सा होने लगा था। फिर सद्गुरु का स्मरण किया और उठ बैठी।

कुछ ही देर में आश्रम के द्वार पर एक बालिका आई। वह साधिका थी, बाहर उससे साधक मिले और आने का कारण पूछा तो उस लड़की ने बताया कि उसके पिता विजय जी जोशी जो स्वयं एक साधक थे तथा बदलापुर के पास ही वांगणी गांव में रहते थे। उनकी रेलवे में नौकरी थी और रेलवे क्वार्टर में ही निवास करते थे। क्वार्टर के बाहर जो खाली जमीन थी वहाँ उन्होंने छोटा सा किचन गार्डन बना रखा था। उन्हें तंबाकू (जो हाथ पर मलकर बनाकर खाई जाती है) खाने का शौक था। उस दिन सुबह वे अपने गार्डन में पौधों और सब्जियों को केमिकल यानी खाद और कीटनाशक दे रहे थे। उसी समय उन्हीं भरे हाथों से उन्होंने तंबाकू बनाई और खा ली। थोड़ी देर में उन केमिकल्स का असर होने लगा और वे जहरग्रस्त हो गए। शरीर नीला पड़ने लगा, मुँह से झाग आने लगे।

इस अवस्था में वे बार बार बा, बा, गुरुदेव, गुरुदेव ऐसा पुकार रहे थे। घरवाले उनकी ये दशा देखकर तुरंत अस्पताल लेकर गए और उनकी एक लड़की यह समाचार लेकर त्रिलोक्य में आई हुई थी। मेरी स्थिति भी लगभग उस साधक सी ही थी। वो मेरे नाम को पुकार रहे थे और मैं अपने गुरुदेव का स्मरण कर रही थी। तभी उसी अवस्था में मैंने अभिषेक प्रारंभ किया और उस लड़की को भस्म की पुड़िया (तब कागज में देते थे) दी। उसे बताया कि इस भस्म को उसके पिताजी के मुख में देना है तथा सारे शरीर पर भी लगाना है। वो लड़की भस्म की पुड़िया लेकर तुरंत अस्पताल जा पहुंची और जैसा बताया गया वैसा ही किया। एक-दो दिन में वह साधक स्वस्थ हो गया। उसी अवधि में मैं भी ठीक हो गई पर नीलापन कई दिनों तक रहा।

मुझे संतोष था कि मेरे सद्गुरुदेव ने व पावन परंपरा ने मेरे साधक को इस आगत विकट काल से बचा लिया।

-●✻●-

सबका मूल सद्गुरु

संत श्री तुलसीदास जी

रवि पंचक जाके नहीं, ताहि चतुर्थी नाहि।
नित सप्तक घेरे रहे, कबहुं तृतीया नाहि।।

गोस्वामी तुलसीदास जी का यह सूत्रात्मक दोहा है। इसका अर्थ समझने के लिए सप्ताह के दिनों का आधार लेना आवश्यक है। सप्ताह के 7 दिन इस प्रकार हैं – 1. रविवार 2. सोमवार 3. मंगलवार 4. बुधवार 5. गुरुवार 6. शुक्रवार और 7. शनिवार। ऐसे ये 1 से 7 क्रमांक तक हैं।

गोस्वामी जी कहते हैं कि 'रवि पंचक जाके नहीं' अर्थात रवि से पाँचवा दिन जो गुरु होता है वो जिसके पास नहीं है यानी जो निगुरा है, जिसको गुरु आश्रय नहीं मिला है उसको चतुर्थी नहीं होती। चौथा दिन बुधवार बुद्धि का प्रतीक है। इसका आशय यह है कि जिसके गुरु नहीं उसमें बुद्धि आ ही नहीं सकती।

इसी प्रकार आगे वे कहते हैं 'नित सप्तक घेरे रहें। सातवाँ वार शनि है। यदि बुद्धि नहीं है तो शनि का प्रकोप नित्य बना रहता है। कोई भी कार्य अपूर्ण ही रहता है या अशुभ ही होता रहता है। अर्थात बुद्धिहीन व्यक्ति संकटग्रस्त ही रहेगा। अंत में आया है कि कबहुँ तृतीया नाहि। तीसरा वार मंगलवार है। मतलब है कि शनि का प्रकोप है तो मंगल अर्थात शुभ कैसे होगा ? इन सबको जोड़ें तो अर्थ होगा कि जिसके जीवन में गुरु नहीं उसमें बुद्धि नहीं हो सकती। जिसमें बुद्धि नहीं उस पर शनि का साया नित्य बना रहेगा। और शनि के होते हुए जीवन में कभी भी मंगल नहीं हो सकता।

इन सब के मूल में गुरु है। गुरु महिमा का यह प्रतीकात्मक पद हम सबके लिए अनुकरणीय है।

-●✲●-

साधन-संपदा

निरंतर साधन ही परिणामकारी है

जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई और उस पर मानव आया तब से उसे ईश्वर या सृष्टा को जानने की इच्छा रही है। ईश्वर से कृपा पाकर जीवन में सुखी व संपन्न रहना भक्ति का एक प्रकार है तो ईश्वर को प्राप्त कर लेना यानी आत्मा को परमात्म तत्व में परिवर्तित कर लेना यह दूसरा प्रकार है। इन दोनों ही प्रकार का केन्द्र बिन्दु तो तत्वरूपी ईश्वर ही है। इन दोनों प्रकारों की पूर्ति करने के लिए हमारी आध्यात्मिक परंपरा समर्थ भी है एवं परखी हुई व प्राचीन भी है।

शक्तिपात साधन परंपरा उसी गुरु परंपरा का एक दिव्य रूप है। एक सद्गुरु किसी साधक को पात्र बनाकर या जानकर उसमें अपनी शक्ति से ईश्वरीय तत्वों को जानने की सामर्थ्य डाल दे, यही शक्तिपात है। परिभाषा व प्रकार की दृष्टि से अनेक विभेद व मतभेद हो सकते हैं परन्तु शिष्य के कल्याण हेतु सद्गुरु जो अपनी शक्ति का स्थानांतरण करता है वही शक्तिपात है। यह हस्तान्तरण या स्थानान्तरण अलग-अलग स्तर पर इसलिए दिखाई देता है क्योंकि हर पात्र की अपनी-अपनी क्षमता होती है। देय तत्व या शक्ति समान है पर ग्राह्यता असमान होने से अलग-अलग स्तर दिखाई देता है।

इसको एक उदाहरण के माध्यम से सटीक रूप से समझा जा सकता है। जैसे कोई गमला है और उसमें पौधा लगा हुआ है। वह गमला अपने आप में इतना भव्य, दिव्य व नयनाभिराम है कि उसे देख-देख कर ही उल्लास होता है। सामान्यतः कोई भी साधक सद्गुरु शक्ति को इसी रूप में देखता है। वह ऐसा जानकर

संतुष्ट होता है कि ऐसा गमला पूर्व में किन-किन साधकों के पास था ? इस गमले से कितने साधकों ने प्रेरणा पाई है आदि आदि। वह साधक भी गमले का प्रशंसक बन जाता है।

इससे आगे बढें तो गमले में लगे पौधे को देखते हैं यह पौधा भी विलक्षण है। इसमें केवल तीन पत्तियां लगी हैं। एक पत्ती पारिजात की है, एक कल्पतरु की और एक संजीवनी की। पारिजात का गुण है सौंदर्यबोध। हर बात चाहे वह बाहरी हो या भीतरी उसमें एक सलीका हो, खिलखिलाहट हो, एक आकर्षण हो। वैसे ही कल्पपर्ण की यह विशेषता है कि वह इच्छापूर्ति में सक्षम है। उससे जो कामना करेंगे वह पूरी होती है। तीसरी पत्ती संजीवनी की है। यह अमरता की प्रतीक है। इस गमले में लगे पौधे से अर्थात् इस परंपरा के सर्वांग पालन से सौंदर्यबोध, कामनापूर्ति व अमरता जैसे वरदानी गुणों प्राप्त होते हैं। गमला देखने वाले हजारों साधक हो सकते हैं तो उस अनुपात में पौधे पर दृष्टि डालकर उसे समझने वालों की संख्या सैकड़ों तक ही सीमित हो सकती है। इस समझ व दृष्टि से भी और आगे बढ़ने पर कोई विरला ही साधक होता है जो वे इन तीनों पत्तियों का अर्क निकालकर उपयोग में लेता है। अर्क यानी रसायन और रसायन यानी तत्व। तत्व वह रसायन है जो रोम रोम तक चला जाए।

गमला, पौधा व अर्क सभी के लिए उपलब्ध है। परंपरा व सद्गुरु सबको पहली ही बार में पूरा गमला ही पौधे समेत सौंप देते हैं। यह साधक को तय करना है कि वह गमले तक सीमित रहे? या पत्तियों के वैभव तक या अर्क तक पहुँचे। गुरु परम्परा में सद्गुरु तो शक्तिपात द्वारा जो देना है दे चुका है। परिणाम भिन्नता का मुख्य कारण है कि साधक द्वारा निरंतर साधन। जो निरंतर साधन करेगा उसके जीवन में ऐसी संपदा पैदा हो सकती है जो उसे परंपरा के अर्क का पान करा दे। यह साधन संपदा कमाना हर साधक का अधिकार है तथा कर्तव्य भी। – स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

-●✻●-

1. श्रीमती अलका बापट, बिलासपुर

सद्‌गुरु दृष्टि की सूक्ष्मता

मेरे अनुभव यों तो अनगिन हैं पर मुझे न जाने क्यों बताने में झिझक सी रही है। जब से मैं शिव-गरिमा पत्रिका में अन्य साधकों के अनुभवों को पढ़ती-सुनती हूँ तो लगा है कि अपने मन की बात गुरुदेव को क्यों नहीं बताएँ?

हाल ही में संपन्न सहस्र चंद्रदर्शन की ही बात है। गुरुदेव प्रभु बा ने सभी साधिकाओं को साड़ियाँ प्रसाद रूप में भेंट की थी। मुझे भी एक साड़ी मिली। बात यों सुनने में छोटी लगेगी पर साधक का मन सद्‌गुरु कैसे पढ़ लेते हैं तथा कैसे समाधान कर देते हैं यह किसी भी साधक के लिए बहुत बड़ी कृपा है। संयोग देखिए कि जैसी साड़ी, जैसा रंग, जैसी डिजाइन मैं काफी लंबे अरसे से ढूँढ रही थी, मेरा दिल करता रहा एक वैसी साड़ी कहीं से भी मंगवाकर पहनूँ। मैंने ऑनलाइन व ऑफलाइन बहुत प्रयास किये पर वैसी साड़ी जिससे मेरी कल्पना बसी थी अनेक बार सर्च करने के बाद भी नहीं मिली। कई महीनों तक ये कोशिश की। और आश्चर्य कि ठीक वैसी ही साड़ी गुरुदेव ने मुझे इस महोत्सव में दे दी।

कैसे प्रभु बा ने मेरे मन के विचारों को पढ़ा ये तो वो ही जाने पर मेरे तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं था और खुशी का पारावार न था। प्रभु बा ने किसी के हाथ वह साड़ी भिजवाई। ज्यादातर साधिकाओं को एक जैसी सी साड़ियाँ मिली थीं पर मुझे अलग सी मिली थी। मैंने हाथ में लेते ही जान लिया कि ऐसी साड़ी पहले क्यों नहीं मिल रही थी? यह तो दिव्य भेंट के रूप में गुरुदेव की आशीषों के साथ मिलनी थी तो अन्यत्र कैसे मिलती? मैंने उस साड़ी को तुरंत धारण कर लिया। जब गुरुदेव ने देखा तो पूछा-साड़ी कैसी लगी? इसका उत्तर देना न तो मेरे बस में था और न होंठ ही हिल पा रहे थे। बस दिल यह कह रहा था कि कैसे सद्‌गुरु के दिल ने साधक के दिल की बात को पहचान लिया। अनुभव की महत्ता इस बात की नहीं है कि साड़ी मनचाही मिली बल्कि यह है कि हर साधक की मनोदशा का छोटे से छोटा लेखाजोखा भी गुरुदेव की नजर में रहता है।

-●✻●-

2. श्री चैतन्य गद्रे, कैलिफोर्निया

सद्गुरु साक्षात्

4 जनवरी 2022 की बात है। सामूहिक ध्यान साधना शिविर में सायंकालीन ध्यान का सत्र था। मातोश्री सभागार में सद्गुरु के साथ बैठकर ध्यान का दुर्लभ अवसर था। एक घंटे का सत्र रहता है तो करीब ***30*** मिनट का गहरा ध्यान लगा था। इस गहनता तक उतरने के बाद मुझे लगा कि मेरी नाभि के नीचे कुछ ऐसी रचना है जो ऊपर जा रही है। यह उर्ध्वगति सहज न होकर बलपूर्वक हो रही थी। ऐसी शक्ति का मुझे पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था। वह शक्ति ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ती गई तो मेरी शारीरिक दशा में अचानक परिवर्तन आने लगे। बेचैनी बढ़ गई और ऐसा लगने लगा कि तेज बुखार हो रहा है। कभी लगता की तेजी से दस्त लगने वाले हैं। मैं अपने आपको संयमित करते हुए उन प्रभावों को दबाकर ध्यान में ही बैठा रहा।

अब वह शक्ति सीने तक चढ़ गई। इसके कारण मेरा शरीर अति तप्त हो उठा। मेरी स्पर्शेंद्रिय की क्षमता लगभग खत्म हो गई लगी। मैं केवल उष्णता का ही अनुभव कर पा रहा था। मुझे एहसास हुआ कि दम घुटने वाला है। मैं इस दशा से चिंतित और भयभीत हो उठा। हालत असहनीय हो गई मुझे लगा कि तुरंत उठकर ध्यान स्थल से बाहर चले जाना चाहिए।

सहसा मेरे मन में विचार आया कि सद्गुरु साक्षात् तो बैठे हैं। जो भी घटित हो रहा है वह उनकी दृष्टि में नहीं होगा क्या? फिर मैं इतना भयग्रस्त क्यों हो रहा हूँ? देखा जाएगा कि क्या होता है? जो भी होगा वह सद्गुरु के समक्ष हो रहा है, वे ही देखेंगे।

वह अज्ञात शक्ति अब तक मेरी गर्दन तक चढ़ गई थी। मुझे लगा कि वमन हो जाएगा। जी मिचलाने लगा, सिर बहुत भारी हो गया। तभी मुझे पसीना आने लगा और शरीर ठंडा होने लगा। रोम रोम से मानो पसीना चू रहा था। कुछ ही क्षणों में मेरा कुर्ता पूरा पसीने से तरबतर हो गया। यह स्थिति लगभग 2 मिनट तक रही। चेहरे पर पसीना इतना था मानो मैंने चेहरा पानी से धो लिया हो। इसके बाद ये सारी प्रक्रियाएं बंद हो गई और मैं शांति का अनुभव करने लगा। ध्यान सत्र समाप्त हुआ। दूसरे दिन गुरुदेव को मैंने यह अनुभव सुनाया तो वे मुस्कुरा कर बोले बहुत अच्छा। कुछ नहीं होता है, ध्यान में कोई अनिष्ट कभी नहीं होता। इसके आगे उन्होंने नहीं बताया और मैं केवल अनुमान ही लगा सकता हूँ कि कुछ अपशिष्ट शरीर में, विचारों में आया होगा तो गुरुदेव ने अपनी लीला से, अपनी विधि से उसे विसर्जित करके समाप्त कर दिया होगा।

-●✻●-

मेरा अपना विश्लेषण

मैं यथासंभव नियमित ध्यान करता हूँ। मेरा स्वभाव है कि मैं हर घटना का, हर क्रिया का, हर साधन का सूक्ष्म निरीक्षण व विश्लेषण करता हूँ। एक दिन विचार आया कि ध्यान से क्या परिवर्तन आता है? देखें। मैंने इस पर अवलोकन प्रारंभ किया तो मुझे जो लगा वह अभिव्यक्त कर रहा हूँ। ध्यान से अस्त्र-शस्त्र (हथियार) एकत्र होते हैं। साधक को ये इल्म भी नहीं होता पर वे संचित होते रहते हैं। ये अस्त्र-शस्त्र अंतर्मन में क्रियाशील होकर हमारे स्वभाव को काटते-छाँटते हैं। जो भी नकारात्मक वृत्तियाँ हैं उनका विमोचन करते हैं।

यही ध्यान साधना की खूबसूरती है कि साधक के सामने जैसी भी परिस्थिति आती है, ध्यान साधना के माध्यम से उसका समाधान करने वैसे ही हथियार प्रकट हो जाते हैं। इन्हें शक्ति भी कह सकते हैं। जब काम हो जाता है तो साधक सोच में पड़ जाता है कि मैंने तो ऐसा नहीं किया न क्षमता थी फिर यह कैसे हो गया? यही ध्यान का रहस्य है। जीवन का प्रबंधन ही बदल जाता है। जो चीज पहले आपको अच्छी नहीं लगती थी अब वो सुहाने लगती है। पहले क्रोध में वाणी पर नियंत्रण नहीं रहता था पर ध्यान के बाद उस हथियार से बोली पर संयम आ जाता है। सारी व्यवस्थाएं मन के अनुकूल होती जाती हैं। फिर मैं अपने सद्गुरु को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

खास बात यह है कि साधक को यह मालूम तक नहीं होता कि ध्यान से कैसी शक्ति, कैसे अस्त्र, कैसे शस्त्र प्राप्त हुए हैं? क्यों ? तो मुझे लगता है कि गुरु परम्परा सोचती होगी कि इसे अपनी शक्ति का प्रत्यक्ष नियंत्रण का मौका मिलने पर कहीं इसका दुरुपयोग न करने लगे। जो भी हो ध्यान किसी परिवर्तन का एक बड़ा कारण है ऐसा मेरा अनुभव है।

-●✻●-

अद्भुत् अनुभव

करीब 20 साल पहले की बात है। बिलासपुर में साप्ताहिकी थी, उसमें प्रभु का अविर्भाव हुआ। प्रभु ने बोला कि हमारे प्राकट्य दिवस यानी अक्षय तृतीया पर स्वामी (यानी मेरा) का मरण दिवस होगा।

सबने सुना, मैंने भी सुना, पर इसका अर्थ कुछ समझ में नहीं आया। ऐसी गूढ़वाणी का अर्थ क्या हो सकता है? कल्पना भी नहीं थी। मैंने भी इसे हल्के में ही लिया। बात आई-गई हो गई। इसके बाद अक्षय तृतीया की साप्ताहिकी के लिए नागपुर की ओर गुरुदेव के साथ सभी ने प्रस्थान किया।

मैं विनीत गुप्ता की गाड़ी में था, मेरे साथ चंदना जी और चार बालिकाएं क्रमशः मनीषा, योगिता, मीनाक्षी व छाया भी थीं। सभी गाड़ियों का काफिला चल रहा था। जब नागपुर का सफर करीब घंटे भर का बाकी था, तभी बा ने हमसे कहा कि तुम लोग आओ, हम आगे चलते हैं और बा निकल गए। हमारी कार में काफी सामान भी था अतः स्पीड कुछ कम ही रही होगी। गाड़ी अपनी गति से चल रही थी पर अचानक न जाने क्या हुआ कि विनीत जो कार चला रहा था, उसे झपकी आई या और कुछ हुआ कार तीन पलटी मारती हुई सड़क किनारे की रेलिंग से टकराकर तिरछी खड़ी हो गई। मुझे जब भान हुआ तो मैंने पाया कि सभी मुझ पर गिरे हुए थे और मैं नीचे दबा हुआ था। व्यस्त रोड़ था इसलिए तुरंत लोगों की सहायता मिल गई। सबको बाहर निकाला। मेरी पसलियों में अंदरूनी चोटें थीं। तुरंत बा को सूचित किया गया। वे वापस लौटे। मेरे अलावा सब ठीकठाक थे। वहीं से निम्मी ताई को फोन करके अस्थि रोग विशेषज्ञ का समय लिया। हड्डियों में टूट फूट तो नहीं थी पर अंदरूनी चोट भारी थी। 15 दिन का बेड रेस्ट बताया था।

उस समय पूनम ताई का नया मकान बना ही था। वहाँ पर साप्ताहिकी रखी थी। एक और साप्ताहिकी विदर्भ श्रद्धा समिति की थी। वह किसी हॉल में थी। बा ने मुझे बेड रेस्ट के साथ पूनम ताई के घरवाली साप्ताहिकी के लिए बताया और जप के लिए समय-समय पर कोई न कोई आता रहा। पूर्णाहुति के बाद तक मैं लगभग ठीक हो गया। पूर्णाहुति के लिए उस साप्ताहिकी के हॉल में गया। मेरा हालचाल पूछते, पूछते ही प्रभु का आविर्भाव हो गया। प्रभु को मैंने पूछा आपने बिलासपुर साप्ताहिकी में मेरे बारे में कुछ घोषणा की थी तो प्रभु ने बताया कि वह जो कार दुर्घटना हुई थी, उसमें चंदना, विनीत व चारों बच्चियों की जीवनलीला समाप्त होनी तय थी। तुम (यानी मैं शिवानंद) को भारी चोट लगने से कोमा में जाकर अक्षय तृतीया पर मरने का योग था। गुरु परंपरा व प्रभु की शक्ति ने तुम सबको बचा लिया।

-●✻●-

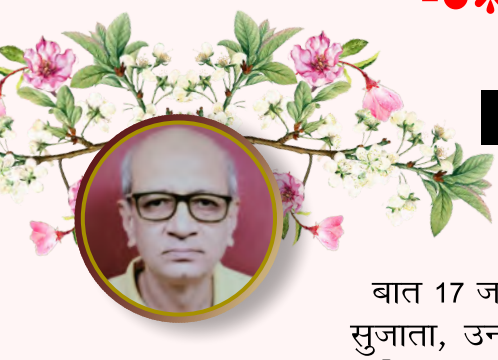

5. श्री संजय शुक्ला, रायपुर

गुरुकृपा से बच गए

बात 17 जनवरी 2025 की है। मैं, मेरी पत्नी सुजाता, उनकी बहन रश्मि, उनके जीजाजी राकेश पाण्डेय अकलतरा जा रहे थे। अचानक ऐसा लगा की गाड़ी के अगले चक्के से कुछ आवाज आ रही है। हम रुके सारे चक्कों को देखा। सब ठीक लगा। फिर गाड़ी चालू कर आगे चलने की कोशिश की तो फिर वैसा ही लगा। फिर रुके, इस बार जैसे ही सामने ड्राइवर साइड के चक्के को छुआ धड़ाम से चक्का फूट गया। हम 90–100 की स्पीड से चल रहे थे। अगर उसी स्पीड में चलते हुवे टायर फट गया होता तो क्या होता सोच कर ही दिल दहल गया। सदगुरुदेव की कृपा से हम न सिर्फ एक्सीडेंट से बचे बल्कि सदगुरुदेव ने हमें मौत के मुंह से निकाल लिया। सदगुरुदेव चरणों में कोटि कोटि प्रणाम।

-●✻●-

शब्दों की माला

(काव्यात्मक अभिव्यक्ति)

श्रीमती वेदिका बढ़ेर, रायपुर

महाकुंभ है शिवपुरी मेरा
चारों धाम समाया
सभी नदों का हो रहा संगम
है जहाँ पावन गुरुवर के कदम
तर जाओ, ओ साधक मेरे
डुबकी लगे जो ध्यान की सरिता में
हर पल है गंगा स्नान तुम्हारा
करो जो जप हर क्षण हर पल में
यहाँ वहाँ मत ढूंढो तुम
बस झाँको इक बार हृदय में
अनुभवों का कुंभ लगा है
हर साधक के निज मन में
भाँति भाँति के गुलों से खिले,
यह बागबां
मधुबन है सुगंधों से भरे
मेरे प्यारे प्रभु बा

रचनात्मकता का आनंद

(साधकों द्वारा निर्मित भावकृतियां)

सम्मति

बात कहां तक पहुंची

1. श्री चंद्रप्रकाश सुरावधनिवार, रायपुर

श्रद्धेय सद्गुरुदेवजी,

सादर प्रणाम, स्वामी दादा सादर प्रणाम।

कुछ दिनों से श्री गुरुदेव की कृपा से जो भाव आ रहे हैं उन्हें सभी से साझा करने का साहस कर रहा हूं। वर्तमान में महाकुंभ का ही सर्वत्र वातावरण है। चहुं ओर उसी की चर्चा है। मेरे भाव से हमारा कुंभ तो नवंबर में सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव में ही हो गया था। वही हमारे लिए कुंभ का स्नान था। ध्यान साधना शिविर में ध्यान में डुबकी लगायी तो है, हमारा आश्रम कुंभ के मानिंद ही तो है। सद्गुरुदेव के द्वारा संचालित आश्रम, केन्द्र और उसके प्यारे प्यारे साधकों से मिलना विचार और अनुभवों का साझा होना, शिव गरिमा का पठन, सद्गुरु के अनुभवों को जितना पढ़ो खिंचाव कम नहीं होता है। वही आकर्षण मेरे क्षेत्र में चपोरा आश्रम का है। कोशिश करता हूं जा सकूं। उपरोक्त सभी वर्णित भावों के लिये सदगुद् भगवान के मान से आभार, उनकी कृपा बनी रहे।

-●✻●-

2. श्रीमती आभा पाल, रायपुर

जनवरी माह की शिव-गरिमा हमेशा की तरह हम साधकों के लिए ज्ञान और आनन्द, आध्यात्म और जीवन जीने की कला का मार्गदर्शन लेकर आई है। सद्गुरु परम्परा का संक्षिप्त परिचय देकर साधकों को इतनी उन्नत और पवित्र परम्परा की जानकारी प्रदान की गई है। परमपूज्य स्वामी शिवोम् तीर्थ महाराज जी, जिनसे परमपूज्य प्रभु बा को संन्यास दीक्षा प्राप्त है उनसे परिचित होना भी अत्यन्त आवश्यक है। यह हमारा, वासुदेव कुटुंब का वंश वृक्ष है। हम सुगंध पथ के पथिक इस वृक्ष की नन्हीं कोंपलें हैं।

मनोभाव शब्दों में प्रस्तुत करना बहुत कठिन होता है, भाव अमीर और शब्द गरीब होते हैं, फिर भी यथासंभव साधकों ने श्रद्धा, समर्पण प्रेम से अपने उद्गार को सहस्र चंद दर्शन महोत्सव पर इसी अभिनन्दन पत्र में सादर अर्पित किये हैं। भाव यही हैं कि- ये चमक, ये दमक, सबकुछ सरकार तुम्हीं से है।

सद्गुरु संदेश में नाम जप की महिमा अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। साधन का प्रमुख आधार वासुदेव कुटुंब में नाम जप ही है। नाम ही मंत्र है। मंत्र के तीन प्रकारों की व्याख्या और महत्व प्रभु बा ने स्पष्ट किये हैं। उन्होंने बतलाया है कि गुरु मंत्र, जप मंत्र और प्रासंगिक मंत्र कब और किस प्रकार किया जाय और उसको उपयोगिता क्या है? गुरुमंत्र और जाप मंत्र गोपनीय रखे जाते हैं। प्रासंगिक मंत्र का प्रसंगानुसार सामूहिक रूप से लयपूर्वक जप किया जाता है। नाम जप साधना के समय उपयोगी होता है। सद्गुरु का कथन है कि मंत्र करामाती होते हैं और साधक की हर प्रकार की प्रगति में सहायक, अतः अधिकाधिक मंत्र जाप करना चाहिए-यह उनकी प्रेरणा है।

नाम जप की महत्ता के साथ-साथ ध्यान-धारणा पर साधकों को अत्यन्त सरल तरीके से सहज अभिव्यक्ति में ध्यान की पद्धति पर मार्गदर्शन दिया गया है। ध्यान की इतनी सुन्दर व्याख्या कभी कहीं नहीं पढ़ी, कभी नहीं सुनी थी... शास्त्रों की अनेक पद्धतियों से अलग सद्गुरु प्रभु बा ने ध्यान को अक्रियता माना है और खूबसूरत तरीके से समझाया भी है- ध्यान न तो प्रयास है ना ही अवहेलना। यह सद्गुरु कृपा से

घटने वाली घटना है। यह कृपा से साध्य है- हम केवल दृष्टा मात्र हैं। ध्यान से स्वभाव, विचार, हृदय में परिवर्तन आकर आनन्द की, विभोर ही स्थिति आती है। ध्यान का यह मार्ग अत्यंत सरल और सहज है। ध्यान पर यह मार्गदर्शन अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है। नाम जप और ध्यान धारणा बार-बार पढ़कर और सुनकर जीवन में उतारना होगा तभी साधक जीवन की सार्थकता है।

पाथेय प्रसाद में प्रभु बा का अनुभव अद्‌भुत है - सही कहें तो अद्‌भुत तो हमारी करुणामयी सद्‌गुरु परमपूज्य प्रभु बा और परमपूज्य सद्‌गुरु परम्परा है जिनका नाम लेने से ले दबंग भी सहायक बन जाते हैं, जिनसे भय लग रहा था, वे इतनी बड़ी मदद कर गए यह सब गुरुकृपा ही तो है कमोवेश सभी साधकों के जीवन में यह कृपा बरसती रहती है, सभी के पास अनुभवों के खजाने हैं। गुरु महिमा में वेदधर्म मुनि और उनके शिष्य संदीपक को कथा गुरु शिष्य संबंधों की, सेवा और समर्पण की प्रेरणा देती है। स्वयं भगवान शिवजी और विष्णु भगवान से बढ़कर गुरु को मानने की प्रेरणा है-प्रेम गली अति सांकरी वामे दो न समाय।

साधन वह मार्ग है जो मंजिल तक ले जाता है। साधन मार्ग के पथिक को सदगुरु की एक चोट की दरकार है, वहीं चोट पुरानी धारणाएं, मान्यताएं तोड़कर जो रिक्त स्थान बनाती है उसी की पूर्ति के लिए कुछ प्राप्त करने की भूख साधक को समाधान पाने के लिए प्रेरित करती है। वह साधन मार्ग पर बढ़ता हुआ, अनुभूतियां प्राप्त करता हुआ अपने लक्ष्य को, अपनी मंजिल को अर्थात् अपनी असली संपदा को प्राप्त करता है, इसीलिए इसे साधन संपदा कहा जाता है। वह संपदा जो साधन से प्राप्त हुई जिसे सद्‌गुरु ने प्रदान किया है। सद्‌गुरु-साधक के संबंध की अति सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

इस विशिष्ट अंक में अत्यन्त आवश्यक जानकारी के साथ साथ प्रभु बा के बडे सुन्दर चित्र व परमपूज्य गुलवणी महाराज जी के सुन्दर संग्रहणीय चिय हैं। साधकों के अनुभव शब्दों की माला और भावकृतियां अत्यन्त सुन्दर हैं। आपको बहुत धन्यवाद, साधुवाद और जय श्री कृष्ण।

-●✻●-

आपकी सहभागिता आमंत्रित

आपको अपने केन्द्र के व्हाट्स एप ग्रुप से हर महीने 'शिव गरिमा ' पत्रिका मिल रही होगी और आप पढ़ भी रहे होंगे। यह पत्रिका अपने आश्रम, शक्तिपात परंपरा व गुरुदेव को समझने में सहायक है। इसलिए वासुदेव कुटुंब के हरेक सदस्य को इसे देखना चाहिए। आपसे निम्नलिखित प्रकार से भागीदारी अपेक्षित है-

1. यदि आपको किसी कारण से यह पत्रिका नहीं मिलती है तो आप इसकी प्रति व स्वर रूप स्वामी गुरुराज से मंगवा सकते हैं। 2. आप इसे पढ़ सुनकर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें। 3. आप अपना अनुभव, जिज्ञासा आदि भी भेज सकते हैं। 4. साधकों के लिए काव्य व मीम्स के लिए भी प्रकाशन की व्यवस्था है। आप साधना, गुरुदेव या आध्यात्मिक विषयों पर ये बनाकर प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। 5. भविष्य में और क्या जोड़ा जा सकता है, यह सुझाव दे सकते हैं। 6. अपने साथी साधकों को इसे पढ़ने, सुनने के लिए प्रेषित कर सकते हैं। 7. शिव-गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं। 8. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रूप से केन्द्र संचालक एक प्रति केन्द्र पर अवश्य रखें । 9. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।आशा है यह बात यथाभाव आप तक पहुंचेगी ।

केंद्र संचालकों के लिये निर्देश - हर महीने शिव गरिमा का डिजीटल प्रकाशन हो रहा है। उसकी ऑडियो/विडियो फाइल भी आपको भेज रहे हैं। आप सभी केंद्र संचालकों को निर्देश है कि आप अपने शहर अथवा आश्रम में होने वाले मासिक अखंड नाम संकीर्तन के पूर्णाहुति के पश्चात इसे ऑडियो/विडियो सिस्टम पर सभी साधकों को सुनाएं। अगर आपके शहर/ गाँव मे नियमित जाप नहीं हो रहा तो आप अपने केंद्र पर सत्संग के पश्चात् भी इसे सुना सकते हैं। इस प्रक्रिया को हमें हर माह के हर अंक के प्रकाशन के बाद करना है। जयश्रीकृष्ण। -स्वामी हृदयानंद

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित
काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, जिला-सलुम्बर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव-गरिमा' ई-मासिकी, निः शुल्क

संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद (गुरुराज)
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा)
ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी, स्वरः संजय शुक्ला, विडियो निर्माणः विजय पांडे

संपर्क सूत्र -आश्रम : 9929681423
स्वामी दादाः 9950502409 संपादक : 9414740814, 8302694012

शिव गरिमा के सभी
pdf और **audio files** के लिए
QR Code Scan करें

www.prabhubaa.com,
Prabhu Baa App